stamped or labelled by them. The specifications which they impose do not conform to our industrial interests.

SHRI SURINDER KUMAR SINGLA: Sir, is he asking a question or entering into a debate? He has the full right to advise, but...

DR. B.B. RAMAIAH: Sir, I will consider the valuable suggestions given by the hon. Member.

श्री जनार्दन यादव: सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि मिर्जापुर और भदोही में जो कालीन इंडस्ट्री है, उसमें बच्चों का कालीन बनाने के काम में उपयोग किया जाता है और जब वह कालीन बनकर आप विदेशों में एक्सपोर्ट करते हैं तो क्या वहां उसका विरोध होता है और उसको जलाया जाता है?

DR. BOLLA BULI RAMAIAH: Mr. Chairman, Sir, if the hon. Member can bring the specific case to my notice, I will find out which country has done it and what has happened to it. The Carpet Export Council has voluntarily taken over the responsibility and is trying to see that child labour is not utilised. If there is any child labour, they are using their own resources by allotting 0.25 per cent, as I said earlier, as the FOB value and ensuring that the child labour is rehabilitated by imparting some training and by having some educational programmes.

SHRI ASHOK MITRA: Mr. Chairman, Sir, despite what the Minister has stated we have read in the newspapers that our textile exports to the United States have slowed down very considerably over the past quarter. This is precisely because of various objections that have been raised with respect to the so-called observance of human rights conditions. Now, I would humbly ask the Minister whether we have prepared any countervailing measures to reverse the pressure which the United States Government is trying to put on us. I find amongst our Ministers a certain attitude of lese Majeste the moment the name of the United States is mentioned as if that country is abvoe all criticism. I would like to know from the Minister why we can't set up our own research and investigation team to find out human labour conditions in the United States itself, how they treat their black labour, how they treat their women labour so that when this thing is placed formally before the ILO and the WTO, we can be ready with our arguments.

DR. BOLLA BULI RAMAIAH: Mr. Chairman, Sir, the hon. Member has raised a specific issue of our exports to the United States. So far as our textile exports to the United States are concerned, this year there is a slight decline in our exports due to recession in that country. They want to take their own decisions on various issues. There is one thing which I would like to bring to the notice of the House. They have put the anti-dumping rule against our woollen goods. We approached the WTO. The WTO said that they were not doing the right thing. Then, they lifted this anti-dumping rule. Now, we are going ahead with export of our products. In rupee terms we exported 21.2 per cent; and in dollar terms we exported 12.1 per cent. This is not recession. We have not reduced our exports. As the hon. Member has said the rate of exports has slightly declined.

भारतीय खाद्य निगम के गोदामों में चूहों तथा नमी के कारण गेहूं और चावल का बरबाद होना

*204. **श्री नरेन्द्र मोहन:** क्या खाद्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि गत तीन वर्षों के दौरान भारतीय खाद्य निगम के गोदामों में चूहों और नमी के कारण गेहूं और चावल की कितनी मात्रा बरबाद हो गई?

खाद्य मंत्री तथा नागरिक आपूर्ति, उपभोक्ता मामले और सार्वजनिक वितरण मंत्री (श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव): एक विवरण सभा पटल पर रखा जा रहा है।

विवरण

भारतीय खाद्य निगम ने सूचित किया है कि 1992-93 से 1994-95 तक भण्डारण हानि के रूप में खाद्यान्नों की मात्रा निम्नानुसार है:—

वर्ष	मात्रा (लाख टन में)	कीमत (करोड़ रुपए)
1992-93	1.5	73.60
1993-94	1.6	87.94
1994-95	1.6	95.85

श्री नरेन्द्र मोहन: सभापति महोदय, आदरणीय मंत्री महोदय से मेरा प्रशन यह है कि यह जो चूहों या नमी के कारण क्षति हो रही है, इसके लिए क्या किन्हीं अधिकारियों को दोषी पाया गया है? जो जानकारी मुझे प्राप्त हुई है आपकी रिपोर्टों से या एफ०सी०आई० की रिपोर्टों से, उसके मुताबित अनेक अधिकारियों पर अभियोग लगाया गया है लेकिन उन अभियोगों पर कोई कार्यवाही नहीं हुई और एक प्रकार से नीचे के छोटे-छोटे कर्मचारियों के स्तर पर कार्यवाही हुई है, अधिकांश को छोड़ दिय गया है जिसका परिणाम यह हुआ है कि भारतीय खाद्य निगम के जो गोदाम हैं उनमें चूहों और नमी के कारण भारी क्षति हो रही है। आपने स्वयं स्वीकार किया है कि लगभग 70-80 करोड़ रुपए की क्षति प्रतिवर्ष हो जाती है। तो मैं जानना चाहता हूं कि यह जानकारी होने के बाद भी जो अधिकारी दोषी हैं, उनके विरुद्ध आप क्या कार्रवाई करने जा रहे हैं?

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव: सभापति महोदय, मैं माननीय सदस्य श्री नरेन्द्र मोहन जी का आभारी हूं कि उन्होंने चूहों और नमी के कारण खाद्यान्न के स्टॉक में जो शार्टेज हो रही है, क्षति हो रही है, स्टोरेज लॉस हो रहा है, उस संदर्भ में सदन का ध्यान आकर्षित किया है। मैं माननीय सदस्य को आश्वस्त करना चाहता हूं कि आपकी चिंता से सरकार भी सहमत है और सरकार ने स्टोरेज लॉस रोकने की दिशा में कई प्रयास और कई उपाय किए हैं। अभी सरकार इतनी सजग है इस संदर्भ में कि चूहों और नमी से होने वाले स्टोरेज लॉस को रोकने की दिशा में काम कर रही है। महोदय, कुछ ऐसे चूहे हैं जो विशेष किस्म के चूहे हैं ..**(व्यवधान)**

कुमारी सरोज खापर्डे: मंत्री जी, चूहे मारने के लिए आपको विशेष परमीशन लेनी पड़ेगी बी०जे०पी० वालों की क्योंकि चूहा जो है, वह गणेश जी का वाहन है और आप चूहों को कैसे मारेंगे उनकी परमीशन के बगैर? आप पहले उनकी परमीशन लीजिए, बाद में चूहों को मारिए।

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव: मैं माननीय सदस्या का बहुत आभार मानता हूं ...**(व्यवधान)**

MR. CHAIRMAN: Let the Minister answer, please.

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव: मैं कह रहा था कि कुछ ऐसे अजनबी किस्म के चूहे हैं जिनके चलते स्टोरेज लॉस हो रहा है। मैं इसको स्वीकार करता हूं और आपसे कहना चाहता हूं कि ...**(व्यवधान)**

श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी: जो ऐसे चूहे हैं उनके द्वारा कितना नुकसान हो रहा है?

MR. CHAIRMAN: Please do not interrupt him. Let him answer.

SHRI S.S. AHLUWALIA: Sir, he should clarify what type of rats he is talking about. *(Interruptions)*.

MR. CHAIRMAN: Give him a chance to clarify.

श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी: इन्होंने दूसरे किस्म के मोटे चूहों का जिक्र किया है। तो दोनों तरह के चूहों से कितना-कितना नुकसान हो रहा है, यह बता दीजिए।

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव: सभापति महोदय, जब मैं जवाब दे रहा हूं तो माननीय सदस्य मेरे जवाब के बाद प्रश्न कर सकते हैं। यह तो आपका अधिकार है। महोदय, चूहे तो बहुत किस्मों के हैं—हाऊस रैट है, हाऊस माऊस है, नार्वे रैट्स हैं, कितनी तरह के चूहों का वर्गीकरण बताऊं मैं आपको। इन चूहों से बहुत नुकसान होता है। आप जानना चाहते हैं इसलिए बता रहा हूं ...**(व्यवधान)**

श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी: किस तरह की बिल्लियां आप वहां मंगवा रहे हैं?

श्री देवेन्द्र प्रसाद: मैं आपको बता रहा हूं कि ऐसी चूहों की खोजबीन सरकार ने बड़ी तत्परता से शुरू कर दी है और माननीय सदस्य ने इस ओर जो सदन का ध्यान दिलाया है, उन्हें मैं बताना चाहता हूं कि ऐसे चूहों के लिए विशेष प्रकार के पिंजरों का निर्माण हमने शुरू कर दिया है। अगले 3 महीनों में कुछ चूहे आपको उन पिंजरों में नजर आएंगे। जो

बचेंगे उनके लिए मैं नरेन्द्र मोहन जी से आग्रह करता हूं कि उनके बारे में विशेष जानकारी आप ही दे सकते हैं।

श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी: उनको राजनीतिक संरक्षण प्राप्त है क्या?

MR. CHAIRMAN: Second supplementary, please.

श्री नरेन्द्र मोहन: माननीय सभापति महोदय, मैं मंत्री जी का ध्यान भारतीय खाद्य निगम की 1993-94 की रिपोर्ट की ओर आकर्षित करना चाहता हूं। यही लेटेस्ट रिपोर्ट यहां उपलब्ध है। इसके अनुसार जो तमाम गड़बड़ियां हुई हैं, उनके बारे में एक ऑडिट रिपोर्ट भी है और उसमें एक उदाहरण देते हुए कहा गया है कि—

> "The Committee was surprised to observe that no salvaging operations were undertaken by the Food Corporation of India, causing huge losses. Due to unsatisfactory preservation measures, there were very hevy infestations in the stocks which also got damaged due to heavy rains."

यह स्थिति केवल एक जगह पर नहीं है। यह स्थिति केवल ललितपुर की नहीं है, देश के अनेक स्थानों पर कभी वर्षा के कारण, कभी नमी के कारण, कभी चूहों के कारण करोड़ों रुपए का खाद्यान्न नष्ट हो रहा है और जिन अधिकारियों को सज़ा दी गई है, जिन लोगों के विरुद्ध कोई कार्रवाही की गई है, वे केवल तीसरे दर्जे के कर्मचारी हैं। जो प्रमुख अधिकारी हैं, उनके विरुद्ध कोई भी कार्यवाही नहीं की गई है। केवल उन पर जांच होती है और फाइलों में बंद हो जाती है। मेरा प्रश्न यह है कि जो मुख्य अधिकारी इसके लिए दोषी हैं, उनके विरुद्ध आप क्या करने जा रहे हैं?

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव: सभापति महोदय, माननीय सदस्य यदि स्पैसिफिक जानकारी दें तो ...**(व्यवधान)**

श्री नरेन्द्र मोहन: मैंने तो रिपोर्ट पढ़कर बता दी है। आप कहें तो भेज दूंगा।

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव: मैंने आपसे पहले ही कहा कि इतनी मुस्तैदी से सरकार इस पर कार्यवाही करने जा रही है कि 3 महीनों के अंदर ...**(व्यवधान)**

श्री नरेन्द्र मोहन: वह विशेष चूहों के लिए आपने कहा है।

*[] Transliteration in Arabic script.

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव: विशेष नहीं, सभी प्रकार के ऐसे चूहे आपको नजर आएंगे अंदर। जो बचेंगे उसकी जानकारी आपको ही हो सकती है। आपकी दक्षता है इसमें। इसलिए आप जानकारी दीजिए चूहों पर। सरकार तैयार है ऐसे चूहों को पिंजरों में बनद करने के लिए।

श्री सैयद सिब्ते रजी: यह सरकार किसी चूहे को नहीं छोड़ेगी। ...**(व्यवधान)**

السید سبط رضی: یہ سرکار کسی چوہے
کو بھی نہیں چھوڑے گی۔۔۔"مداخلت"۔*

श्री राधाकिशन मालवीय: सभापति महोदय, इंदौरी चूहे तो बड़े विशेष थे। अगर आप पर्मीशन दे तो...

एक माननीय सदस्य: बिहारी चूहों से उनका मुकाबला होगा। ...**(व्यवधान)**

श्री राधाकिशन मालवीय: सभापति महोदय, जोगी साहब ने कहा है तो बता दूं। इंदौर में बहुत बड़ा एम० वाय० (महाराजा यशवंतराव चिकित्सालय इन्दौर) हॉस्पीटल है। ऐसा कहा जाता है कि चूहे मांसाहारी नहीं होते हैं, वह शाकाहारी होते हैं। मगर एम० वाय० अस्पताल के अंदर चूहों ने इतने बड़े-बड़े होल कर दिये हैं कि जो मरीज वहां मरते थे उनको वह होल से अंदर ले जाते थे और खाते थे। जब मध्य प्रदेश की सरकार ने इसका रिन्यूअल करवाया तो जो खाद्य विभाग का स्टोर रूम था, उसमें और मुर्दाघर के बीच में खाई हो गयी थी। सरकार ने जब उनको मारने की योजना बनायी तो फॉरेन से किसी एजेंसी को बुलाया गया कि इन चूहों को मारो नहीं तो यह मरीजों का राशन खा जाएंगे। इस प्रकार उस एजेंसी से इस संबंध में व्यवस्था करने के लिए कहा गया। वह बाहर की कोई कम्पनी थी, कहां की थी, मुझे ऐक्जैक्ट नहीं मालूम, मैं इंदौर में रहता हूं इसलिए मुझे यह बात मालूम है कि बिहार से कोई कम्पनी आयी थी। जब चूहों को मारा गया तो तीन ट्रक चूहे वहां से निकले और इन चूहों का साइज़ भी स्पेशल था, यह खरगोशनुमा थे। इस प्रकार से इंदौर से इतने चूहे निकले और जब सरकार ने पूरे हॉस्पीटल का रिन्यूअल करवाया तो चूहों ने इतना नुकसान किया था कि सरकार को करोड़ों रुपये का नुकसान हुआ। इस प्रकार अस्पताल का रिन्यूअल कर उसे फिर चालू करवाया। तो चूहे कितने

खतरनाक होते हैं, सरकार को इस पर विशेष ध्यान देना चाहिए। महोदय, मैं प्रश्न की ओर आता हूं। ...**(व्यवधान)**... जोगी साहब इंदौर में रहते हैं। उनके घर के आस-पास ही ढेर लगाया था। क्योंकि वह स्टेडियम के पास ही रहते हैं, वहीं ढेर लगाया था। ...**(व्यवधान)**...

कुमारी सरोज खापर्डे: उसको चूहा नहीं कहा जाता, उसको घूस कहते हैं।

श्री राधाकिशन मालवीय: महोदय, मेरा प्रश्न भारतीय खाद्य निगम के संबंध में है। सरकार को हजारों टन माल, जिसमें चावल और गेहूं होता है, का नुकसान वहां प्रति वर्ष होता है। तो मैं सरकर से जानना चाहता हूं कि पिछले तीन वर्ष का माननीय सदस्य ने प्रश्न किया है, मान लीजिए कि एक वर्ष में सरकार का एक हजार टन का नुकसान हुआ तो उसके सुधार के लिए आपने कौन-सी योजना बनायी है और जब इस प्रकार से गेहूं और चावल नमी की वजह से या चूहों की वजह से खराब होता है तो सरकार उस माल को बेचती है, इस संबंध में मैं सरकार से जानना चाहता हूं कि जो गेहूं खराब हो जाता है या जो चावल खराब हो जाता है, उस खराब माल को बेचने की प्रक्रिया क्या है? क्या आप उसकी नीलामी करते हैं या सरकर कोई रेट फिक्स करती है? जब आप उसको बेचते हैं तो खरीदने और बेचने के बीच में जो अंतर होता है वह प्रति वर्ष कितना रहा और सरकार को इस पर कितना घाटा हुआ, यह मैं आपसे जानना चाहता हूं?

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव: सभापति महोदय, माननीय सदस्य ने भूमिका के बाद बहुत ही अच्छा प्रश्न पूछा है। मैं प्रश्न पर आता हूं। खाद्यान्नों के संबंध में जो उपाय किये जा रहे हैं ताकि स्टोरेज लॉस नहीं हो, इसके संदर्भ में सरकार ने कई फैसले लिए हैं और वह कारगर फैसले भी हैं। जैसे प्रोक्योरमैंट के समय जो नमी होती है या जो क्वालिटी है, उन मापदंडों का कड़ाई से पालन करने के लिए कुछ निर्देश किये गये हैं। दूसरा फेज़ वाइज़ पहले जो बहुत बड़ी पैकिंग होती थी, इसे घटाकर 50 किलोग्राम की पैकिंग करने के बारे में सकारात्मक पहल की जा रही है। बहुत दिनों से यह मामला लम्बित था और इस संबंध में कई सुझाव आए थे। सदन की स्टैंडिंग कमेटी के भी कई सुझाव इस संबंध में आये थे। तीसरा जो तौल सेतु है वे अनिवार्य कर दिये गये हैं। डीपो में सुरक्षा व्यवस्था को कड़ा करने, अचानक छापों में तेजी लाने, स्टॉक के नियमित रूप से सत्यापन करने जैसे एडमिनिस्ट्रेटिव स्टैप्स लिए जा रहे हैं। कैप भंडारण को कम करने के लिए ढकी हुई भंडारण क्षमता में वृद्धि करना, कैप भंडारण मतलब जो बाहर भंडारण का ओपन कैप सिस्टम है, उसके लिए कोशिश की जा रही है कि गोदामों की क्षमता बढ़ाकर ज्यादा से ज्यादा कवर्ड कैप में अनाज रहे ताकि उसमें नमी का प्रभाव न रहे। गोदामों में जो चूहे घुस जाते हैं तो उसके लिए ऐसे प्लेट-फार्म बनाये जा रहे हैं ताकि वहां चूहे न जा सकें। इस तरह का एक अध्ययन किया गया है कि साईंटिफिक तरीके से गोदामों का निर्माण किया जाये ताकि उनमें चूहों का प्रवेश रुक सके, इस दिशा में कार्यवाही शुरु की गई है।

दूसरे बोरियों की सिलाई मशीनों से की जाये इस पर बल दिया जा रहा है। जिन बोरियों की सिलाई हाथ से की गई है उनके निकालने से स्टोरेज में लॉस होता है। अब प्राइयोरिटी के आधार पर मशीनों से ही बोरियों की सिलाई की जा रही है।

चोरी और उठाईगिरी को रोकने के लिए संवेदनशील डिपो पर केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के जवानों को तैनात किया जा रहा है, कुछ जगहों पर ये पहले ही तैनात थे लेकिन अब चोरी आदि को सख्ती से रोकने के लिए यह कार्यवाही की जा रही है।

भंडारण के दौरान अनाज को सुरक्षित रखने के लिए और कई उपाय किये जा रहे हैं। अभी हाल ही में मैंने एक राज्य का अचानक निरीक्षण किया क्योंकि मुझे सूचना मिली थी कि वहां अनियमितताएं हो रही हैं इसलिए मैंने निजीतौर पर वहां जाकर निरीक्षण किया। अब उस पर कार्यवाही शुरु हो गई है, विजिलेंस की रिपोर्ट भी प्राप्त हो गई और मैंने दोषी अधिकारियों को दंडित किया है। यह सिलसिला विजिलेंस कमेटी के जरिये और राज्यों में भी शुरु हो गया है। हमारे पास लगभग 1800 गोदाम हैं, सभी की वेरिफिकेशन एक दिन में नहीं हो सकती है। इस संबंध में मेरा मानना है कि सरकार को अचानक निरीक्षण करने की कारगर कोशिश करनी चाहिये।

गोदामों से जो हमें नमी-वाला फूडग्रेन मिलता है, उसके संबंध में यह राय है कि उसको सुखाकर गोदामों में रखा जाये। इसके लिए हमने निर्देश भी जारी कर दिये हैं।

जहां तक कीटनाशक दवाओं के प्रयोग का संबंध है। इस मामले में मैं कई तरह की दवाओं के डिटेल्स में नहीं जाना चाहता लेकिन गुणवत्ता की दोहरी जांच के लिए, खाद्यान्नों के नमूनों के विश्लेषण के लिए प्रयोगशाला में

फैले जाने का प्रावधान है। इसकी और ज्यादा मोनिटरिंग हम कर रहे हैं ताकि निश्चितरूप से क्वालिटी ठीक मिले और जो ऐग-विरोधी उपचार है उसके तहत बोरियों पर, दीवारों पर, चट्टों पर या चट्टों के बीच दीवारों पर कीटनाशक दवाओं का छिड़काव करके उनको साफ रखा जाये। इस संदर्भ में भी कार्यवाही की जा रही है। जहां रेल के जरिये या सड़कों के जरिये फूडग्रेन की ढुलाई होती है वहां भी हमको देखना पड़ता है कि रेलवे का रेक्स साफ सुथरा रहे उसमें किटाणु न हों, इस दिशा में भी कुछ कार्यवाही की जा रही है। भंडारण के अनाज की जो क्षति होती है ...**(व्यवधान)**

SHRI AJIT P.K. JOGI: Sir, he is giving a very detailed reply.

श्री नरेन्द्र मोहन: जो सड़ा हुआ खाद्यान्न होता है उसका आप क्या कर रहे हैं? ...**(व्यवधान)**

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव: मैं डिटेल्स इसलिए दे रहा हूं ...**(व्यवधान)**

SHRI AJIT P.K. JOGI: We are more than satisfied with your answer.

SHRI DEVENDRA PRASAD YADAV: Thank you.

SHRI SURINDER KUMAR SINGLA: I am sorry, I am a little bit dissatisfied with his answer.

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव: अब दूसरे माननीय सदस्य का प्रश्न है ...**(व्यवधान)** जो खराब खाद्यान्न है उसका आप क्या कर रहे हैं? उसका आक्सन किया जाता है। आक्सन के जरिये हर तीन साल से पहले-पहले जो खराब हो जाता है, निश्चित रूप से उसका आक्सन कर दिया जाता है।

SHRI YERRA NARAYANASWAMY: Mr. Chairman, Sir, in Andhra Pradesh which makes the largest amount of procurement of rice, to the tune of 40 lakh tons, due to lack of godown facilities—I come from West Godavary district where in Tadepalligudem there is an airstrip—the FCI is keeping paddy in open air land. Due to rat menace, much of the paddy is damaged due to the surrounding paddy fields. I want to know what steps the hon. Minister is going to take to eradicate this rat menace.

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव: सभापति महोदय, माननीय सदस्य से मैं बिल्कुल 100 परसेंट सहमत हूं और कहना चाहता हूं कि माननीय सदस्य स्पेसिफिक जगह का नाम लिखकर दे दें। निश्चितरूप से दूरदराज के इलाकों में, रिमोट इलाकों में गोदामों की क्षमता बढ़ाने का प्रावधान है। 1991 से पहले यह प्रावधान सिर्फ पूर्वांचल के इलाकों के लिए थे। लेकिन अब जो पिछड़े इलाके हैं, जो दूर-दराज के इलाके हैं ऐसे इलाकों में गोदामों को बनाने के लिए वित्तीय सहायता देने पर सरकार विचार करेगी।

SHRI YERRA NARAYANASWAMY: Sir, the place is Tadepalligudem, there is an abandoned air-strip. *(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: You give the information to the Minister and he will take steps.

SHRI SURINDER KUMAR SINGLA: Mr. Chairman, Sir, I am extremely sorry to express my concern because this question, which is basically a very important question, has not been taken very seriously. I come from the State of Punjab. I would like to know from the hon. Minister whether he considers wastage a very important question. He has answered the foodgrain losses. Is wastage the same thing for him? Secondly, according to my knowledge, two million tonnes of foodgrains are being wasted every year in the State of Punjab. You could have avoided importing foodgrains. Wheat is being imported into this country. I come from Patiala. During the last four years lakhs and lakhs of tonnes of foodgrains are being wasted not only due to rats and but also due to other factors like inadequate storage facility, temporary storage, uncovered storage, etc. One would like to know what the exact amount of foodgrain loss is not only because of rats and moisture but also because of other factors. We are importing foodgrains. The foodgrain price is increasing every year. I want a complete answer to this question.

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव: सभापति महोदय, मैंने विस्तार में इस संदर्भ में सदन को बताया है कि

क्या-क्या उपाय किए जा रहे हैं। माननीय सदस्य जिस संदर्भ में प्रश्न पूछ रहे हैं अभी तो 1992-93 और 93-94 का है। इस साल का आडिट हो रहा है। अभी तक फिगर्स नहीं आई हैं...

SHRI SURINDER KUMAR SINGLA: The storage losses are not only due to rats and moisture but also due to mishandling while taking from one place to another place. What is the total loss? This is not the real figure. You are underestimating the figures. That is why I said that you would not have imported foodgrains at all. You would have saved the foodgrains. It is a serious question. The second part of the question was whether you would consider wastage and loss as one and the same thing. That is the issue.

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव: मैं आपसे कह रहा हूं कि इस साल का आडिट में है। पिछले साल 1994-95 में 0.16 मिलियन टन था और इस साल जो लास हुआ भण्डारण का...

SHRI SURINDER KUMAR SINGLA: You are talking about the loss due to rats and moisture. What about other losses?

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव: मैं टोटल कह रहा हूं। मैं कम्पलीट, टोटल क्वांटिटी बता रहा हूं। स्टोर और हैंडलिंग में जो टोटल लास हुआ है, वह बता रहा हूं।

MR. CHAIRMAN: He is answering.

SHRI SURINDER KUMAR SINGLA: Does it include pilfereage?

SHRI DEVENDRA PRASAD YADAV: Yes.

टोटल जो लास हुआ, क्वांटिटी में कि 0.40 परसेंट जो शार्टेज हुआ वह मैं बता रहा हूं। मैं केवल लास नहीं बता रहा हूं। आप बता रहे हैं नमी के कारण और चूहों के कारण, यह आप बता रहे हैं। जो टोटल शार्टेज है उसके संदर्भ में मैंने आपको बताया है। इसका स्टेंडिंग कमेटी में भी मैंने जवाब दिया है।

SHRI G. SWAMINATHAN: Sir, is the Minister aware that a notional percentage is allowed by the FCI at the highest level for losses and wastages? This notional percentage has been allowed even in cases where there have been wastage caused by human rats which are pilfering these things. The point is this. There is a notional percentage allowed by the FCI at the highest level of policy makers for wastage due to rats as also moisture. There are cases of godowns where there has not been any wastage due to rats or moisture but because the wastage is within the percentage allowed, the human rats are taking advantage of the percentage and pilfering the whole thing. Is the Minister aware of this? Will he stop the whole thing? They are allowed a certain percentage of waste due to moisture. Though there is no wastage, they pilfer the whole thing. Later on they say that this wastage was due to rats and moisture. Is the Minister aware of it? Will he take steps to stop it?

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव: सभापति महोदय, मैं इस सदन को और माननीय सदस्य को यह जानकारी देना चाहता हूं और साथ ही माननीय सदस्य के प्रति आभार भी व्यक्त करता हूं, आपने जो सवाल पूछा है, अभी माननीय सदस्य पटियाला से बोल रहे थे, हाल ही में मुझे इस तरह की सूचना मिली थी कि स्टाक शार्टेज है, इस संदर्भ में मैंने सी०बी०आई० को अभी पटियाला का, आपकी जगह का, अमलोह में जो फूडग्रेन शारटेज था, वह मामला सी०बी०आई० के सुपुर्द किया है। सी०बी०आई० अभी इन्वेस्टीगेशन कर रही है, इसलिए इस संदर्भ में आगे कुछ बताना मेरे लिए ठीक नहीं होगा।

Export Quota for Milk Powder and Infant Milk Food

*205. DR. MOHAN BABU:

Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

(a) whether Government have halved the export quota for milk powder and infant milk food to 10,000 tonnes for the current financial year;

(b) if so, the reasons for reducing the export quota; and

(c) the causes for apprehension that availability of milk and milk powder during the forthcoming lean season is likely to be much below the demand?